अध्ययन सामग्री !-

विषय - हिन्दी (रचना)
वर्ग - स्नातक खण्ड I (प्रथम)
प्रश्न पत्र - अनिवार्य पत्र

सुमन कुमारी
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एच॰डी॰ जैन कॉलेज, आरा
मो० - 7091260073

[redacted]

साँप :

कविता का भावार्थ ।

Scanned with CamScanner

6 'साँप' कविता का भावार्थ लिखें।

अज्ञेय प्रयोगवाद व तारसप्तक के मूर्धन्य हस्ताक्षर हैं। कहना यह सही होगा कि अज्ञेय बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कलाकार हैं। इनकी कविताओं में क्षणवाद व व्यक्ति-सत्य और आत्मन्वेषण की खोज-पड़ताल ईमानदारी पूर्वक की गई हैं।

आधुनिक कवियों में सर्वाधिक विवादास्पद कवि अज्ञेय की 'साँप' शीर्षक कविता एक प्रतिनिधि रचना है। प्रस्तुत कविता में तथाकथित महानगरीय-जीवन व सभ्य समाज में प्रेम, दया, ईमानदारी, सहयोग और सेवा के स्थान ही सम्वेदना आदि मानवीय मूल्य टूट रहे हैं। मनुष्य के भीतर से प्रेम-तत्व तिरोहित हो रहा है और अमानवीय मूल्यों को आत्मसात कर अपने जीवन को विषैला बना लिया है। इन्ही मूल्यों की मर्मस्पर्शी विवेचना कवि ने इस कविता में की है। सर्व-प्रथम आधुनिकता का माया-जाल नगर और शहरों पर पड़ा है। सम्प्रति नगरों की प्रवृति व प्रकृति यह हो गई है कि विभाजन और खण्डित जीवन बोध को स्वीकार कर जीना। शहरी जीवन भौतिक साधन और आर्थिक सुविधाओं से सम्पन्न अपने क्षणिक लाभ के लिए दूसरों के प्रति छल-फरेब, कपट-धोखा, अन्याय व अपराध कर देना सहज शहरी-जीवन की पहचान हो गयी है।

कवि इसी आलोक में साँप को सम्बोधित करते हुए उससे पूछता है कि वह कभी न तो सभ्य कहलाया और न ही सभ्यता का प्रतीक बना। नगरों में उसे रहने का सुअवसर मिला, लेकिन मनुष्यों के काटने या डसने जैसा अमानवीय विषैला कार्य करने की प्रेरणा कहाँ से मिली।

बिल्कुल सर्वविदित है कि कवि ने आज के तथाकथित वर्तमान शहरी-जीवन में हुए मानवीय मूल्यों के चतुर्दिक पतन के कारण ही सर्वत्र विषैलापन महसूस किया है। प्रकृति से साँप विषैला हो

है, वह साँप चाहे गाँव का हो या शहर का या जंगल का कवि की मान्यता है कि वर्तमान में सभ्यता और विकास का निकष शहर है। लेकिन शहरों की सभ्यता एक-दूसरे के प्रति घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, वैर, धोखा, छल, प्रपंच ही अधिक विकसित हुई है। कवि इन्हीं अमानवीय मूल्यों को व्यंजना-शैली में उरेहा है। कवि की आत्म-स्वीकृति है कि इन दुर्गणों के विष का ही विकास हुआ है। ये शहर के सभ्य व विकसित कहे जाने वाले लोग साँप हैं। इनके विष के समक्ष वास्तविक साँप का विष भी कम पड़ गया है। यानी शहर के लोग साँप से भी अधिक विषैले हो गये हैं।

साँप आज के तथाकथित महानगर में जीने वाले सभ्य मनुष्य का प्रतीक है, यह कविता द्वंद्व मुक्त है। कवि ने तथाकथित आधुनिकता जीवन के एक विकृत और सारहीन मूल्यों को बेबाकी से उठाया है। आधुनिक सभ्यता के मोह-जाल में शहरी जीवन से प्रेम, भाईचारा, परस्पर विश्वास, सहयोग व सेवा आदि पारम्परिक मूल्यों की रक्षा करने में शहर विफल रहा है। शहरों ने इंसान को तन्हाई व अकेला ही नहीं, असुरक्षा के साथ ही भीषण भय में जीने को विवश कर दिया है। जंगलों में रहने वाले साँपों से मनुष्य को कम खतरा है, बल्कि मनुष्य ही मनुष्य के लिए उस साँप से अधिक विषैला और खतरनाक है। इन्हीं जीवन बोधों को कवि ने अपनी प्रस्तुत कविता 'साँप' में बहुत ही मार्मिक ढंग से उरेहा है।

Scanned with CamScanner